

नमोऽर्हत्-सिद्धाऽऽचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

ॐ ह्रीं क्लीं सर्वतोभद्रपार्श्वनाथस्वामिने नमः

श्रीमदात्म-वल्लभ-समुद्रे-न्द्रदिन्न-रत्नाकरसूरिगुरुभ्यो नमः



‘तीर्थंकर महावीर युनिव्हर्सिटी’ (TMU), (मुरादाबाद) के तत्त्वाधान में

“भगवान श्री सुमतिनाथ-समुद्र जैन पाठशाला” ,मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

के अंतर्गत “CERTIFICATE COURSE IN JAINISM” (श्रावकाचार - तत्त्वज्ञान - जैन इतिहास)

SYLLABUS (पाठ्यक्रम)

- काल, काल प्रभाव और काल के भेद
 - उत्सर्पिणी काल
 - अवसर्पिणी काल
 - अवस्थित काल
- जन , जिन और जैन
- अरिहंत परमात्मा: के 12 गुण द्वादशगुणधारक
 - अष्ट महाप्रातिहार्य
 - चार अतिशय
- तीर्थंकर के जीवन के पांच भाग : पंचकल्याणक
 - च्यवन कल्याणक
 - जन्म कल्याणक
 - दीक्षा कल्याणक
 - केवलज्ञान कल्याणक
 - निर्वाण कल्याणक
- धर्मनगर का द्वार- सम्यक्त्व
 - सम्यक्त्व के पांच लिंग
 - उपशम
 - संवेग
 - निर्वेद
 - अनुकम्पा
 - आस्तिक्य
- श्रावकाचार : षड आवश्यक
 - सामायिक आवश्यक
 - चतुर्विंशति-स्तव आवश्यक
 - वंदना आवश्यक
 - प्रतिक्रमण आवश्यक
 - कायोत्सर्ग आवश्यक
 - पचकखाण आवश्यक

-: वाचनाचार्य : -

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरंधर सूरि जी महाराज साहेब ।